ST. JOSEPH'S COLLEGE (AUTONOMOUS), BANGALORE-27

III - SEMESTER (B.Com)

Mid Semester Test, August - 2019

Hindi - HNC318

Time- 1hr. **Max Marks-30**

प्रश्न-1. निम्नलिखित प्रश्नों से किसी एक का उत्तर लिखिए। 10x1=10

1) चाणक्य के चरित्र को स्पष्ट करते हुए उनके दंड विधान पर चर्चा कीजिए।

2) 'अग्नि शिखा' नाटक के प्रथम अंक का सारांश लिखिए।

प्रश्न-2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर पत्र लिखिए। 1x10=10

1) केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में नियुक्त किए गए अध्यापकों की सूची प्राप्त करने हेतु सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा सरकारी पत्र लिखे।

2) टेलीफोन भवन, बेंगलुरु को हिन्दी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करने के लिए अर्ध-सरकारी पत्र लिखे।

प्रश्न-3. निम्नलिखित लिखित अनुच्छेद का संक्षेपन करते हुए उसे उचित शीर्षक दीजिए। 1x10=10

आजकल श्रमिकों को उनके श्रम का प्रतिफलन प्राय: रुपये-पैसों में चुकाया जाता है। इसे नकद मजदूरी कहते हैं। यदि मजदूरी अन्न-वस्त्र आदि पदार्थों में दी जाती तो उसे मजदूरों की असली मजदूरी कहा जाता है। इसमें मकान, शिक्षा या मनोरंजन आदि की विशेष सुविधाएँ भी मिली होती है, जो मजदूरों को अपने मालिक की ओर से प्राप्त होती है। नकद मजदूरी से श्रमिकों की दशा का ठीक ज्ञान नहीं होता है। यह स्पष्ट है कि दो श्रमिकों में से जिसे पदार्थ और सुविधाएँ अधिक मिलती है उसकी दशा दूसरे से अच्छी होगी। भारतवर्ष में पहले अधिकतर मजदूरी अन्न के रूप में चुकायी जाती थी। आचार्य

कौटिल्य ने अपने 'अर्थशास्त्र' में नकद और असल दोनों प्रकार के वेतन की व्यवस्था की है। यह साधारण तौर से प्रत्येक ऐसे श्रमिक के लिए जो एक व्यक्ति या संस्थान का काम करे कुछ नकद वेतन निश्चित करता है, साथ ही कुछ भोजन आदि। उनकी व्यवस्था के अनुसार श्रमिक अपने खाने-पीने की व्यवस्था से बेफिक्र रहता है और उस नकद वेतन से अपनी दूसरी जरूरते पूरी करता है। इस दशा में पदार्थों के मूल्य घटने-बढ़ने पर श्रमिकों की आय पर बहुत कम असर पड़ता है। बहुत से देहातों में अभी यहीं दशा है। कृषि समाज मजदूरी अन्न के रूप में पाते हैं।

-0-0-0-0-0-0-